यज्ञों में शामिल करें.. राष्ट्र हित यज्ञ (हवन)

वैदिक काल से चली आ रही हिन्दू संस्कृति की अहम परम्परा हवन अर्थात 'यज्ञ' करने के पीछे छुपे कारणों सहित और उनके आध्यात्मिक, भौतिक सुख-शांति और वैज्ञानिक महत्व को ...वर्तमान परिक्षेत्र में समझने का गहराई से अध्ययन किया जाना चाहिये ।

यूं तो प्राचीन समय से आज के आधुनिक युग तक इन 'यज्ञों' की परम्परा मानव जीवन में सर्वश्रेष्ठ कर्म व अभिन्न अंग रहे हैं। वर्तमान समय में भी अगर यज्ञों की परंपरा को .. देश में उत्पन्न विरोधाभास प्रसंगों से जोड़कर यज्ञों की अहमियत को समझने की कोशिश होनी चाहिए। देश की प्रशासनिक प्रणालियों को और सुदृढ़ बनाने के लिए इन्हें शामिल करना कारगर साबित हो सकता है।

दरअसल कि कोई भी क्षेत्र हो, उनसे जुड़े राज-प्रतिनिधियों द्वारा किए गये कार्य करने की प्रक्रिया के पीछे... अगर निस्वार्थ सेवा भावना हो, और नेकी, भलाई करने की अच्छी नियत से परिपूर्ण हों। उस स्थिति में इस दिशा में किए गये सभी कार्य सदैव आशाओं और उम्मीदों से भरे हुए रहते है। इन परिस्थितियों में किसी व्यक्ति

विशेष या प्रमुख के विरोध में अड़े रहना और अपने निहित स्वार्थ को देश-विकास के रास्ते में डाल देना उचित नहीं समझा जा सकता है।

यह कभी नहीं भूलना चाहिये, कि हर शुभ कार्य की पहल से पूर्व ही उनसे प्राप्त होने वाले लाभों को अस्वीकार कर देना किसी के हित में नहीं होता है। फिर वह चाहे घर परिवार हो, या समाज व देश हो.. यह सिर्फ हमें नकारात्मक सोच की ओर ढकेलता है।

माना जाता है कि कोई भी कार्य को पूरा करने में सफलता एकजुटता से ही हासिल की जा सकती है। यहां कहना भी गलत नहीं होगा कि इंसानों की प्रवृत्ति ही है, कि जब किसी संकल्प को अध्यात्म के साथ जोड़ दिया जाता है। तब वह एक परम्परा हो जाती है और जो हमें एजेंडों को पूरा करने में अपना सहयोग देने के प्रति उस वचनबद्धता को याद दिलाता है।

ऐसे में देश की संस्कृति का अहम हिस्सा, **हवन-यज्ञों की परम्परा** और उससे सम्बन्धित विधि-विधान प्रक्रिया को सहज रूप से निभाना, खुद ब खुद हर व्यक्ति के धर्म-कर्म के दायरे में आ जाता है। इसलिए देश की समृद्धि और नागरिकों की आंतरिक चेतना और कर्तव्यनिष्ठा को जगाने का यह एक साधन बन सकता है।

इसमें कोई दो राय नहीं कि हवन प्रक्रिया में आहुतियों के महत्व को हिन्दू धर्म में शुद्धिकरण का एक कर्मकांड-रूप में हम मानते और स्वीकारते भी है। जो हमें हर शुभ कार्य करने के प्रति निष्ठावान बनने की भावना को प्रेरित भी करता है। ईश्वर के प्रति आस्था और विश्वास को रेखांकित करता है। कहने का तात्पर्य यह कि अगर हवन को देश की कल्याणकारी योजनाओं को पूरा करने के लिए 'एक संकल्प' बना कर शामिल करें, तो मुमकिन है पूर्ण आहुतियों में अनेक हाथों का साथ मिल सके। देश विकास के रास्ते तभी सरल व सुगम हो पाएंगे।

इसीलिए आदिकाल से चल रहे इन हवन 'यज्ञों' की श्रृंखला में एक नया नाम 'देश हित यज्ञ' को जोड़ कर, इस बात को समझने का प्रयास है। यही कार्यों को अंजाम देने में एक अचूक रामबाण इलाज साबित हो सकता है क्योंकि.. इनका उद्देश्य सिर्फ सकारात्मक सोच और शरीर व मन को ऊर्जा प्राप्त कराना है।

किसी विषय पर भिन्न विचारधारा रखना और विचारों को प्रकट करना नागरिकों की स्वतंत्रता के क्षेत्र में तो है, किन्तु अपने उन अधिकारों को समाज और देश के विकास, समृद्धि के भी ऊपर रखना सही नहीं ।देश के लिए उठाए गये 'उन कार्यों' के मार्ग में बाधा उत्पन्न करना .. नागरिकों की देश के प्रति उनकी कर्तव्य परायणता पर प्रश्न चिन्ह लगाता है। क्योंकि समाज और देश के लोगों के हित में किए जाने वाले कार्यों को सफलतापूर्वक पूरा करने के पीछे अनेक संभावनाएं होती हैं।

इसलिए यहां हमारा देश के प्रति पहला दायित्व बनता है कि विकास और सुरक्षा से जुड़ी उन सब योजनाएं में हर स्तर पर अपना सहयोग व सहमति दें। हमारा हर कदम ही समाज और देश के प्रति हमारी सकारात्मक भूमिका को दर्शाता है।

देश की सुदृढ़ व्यवस्था के लिए किसी भी प्रकार के कार्यों को अंजाम देते हुए, अत्यधिक शुभ और प्रभावकारी लाभ हासिल हो सके.. यही तो देश की सांस्कृतिक विरासत विशेष परम्परा हवन या यज्ञों को करने से जुड़ी भावनाएं हैं। और उनके महत्व को राष्ट्रीय संदर्भ से जोड़ कर देखना एक नया कारगर उपाय साबित हो सकता है। देश के ग्रह दोषों के निवारण के लिए भी यह जानी पहचानी ही नहीं बल्कि एक उत्कृष्ट सरल व सफल विधि साबित हो सकती है। इसलिए यज्ञों को राष्ट्रीय स्तर पर करने का चलन होना चाहिये। यज्ञों के महत्व को समझने के लिए उन्हें करने के पीछे छुपी उनकी खूबियों को जानना होगा।

यूं तो प्राचीन ग्रंथों में अनेक यज्ञों व हवनों का वर्णन किया गया है। जिनका शुभ प्रभाव न केवल मानव जाति पर होता है बल्कि यज्ञों के शक्तिशाली तत्व दूषित वायु प्रदूषण को कम करने में सक्षम भी है।

विभिन्न ऋतुओं में होने वाले रोगों से बचाने में भी मदद मिलती है। अनेक वैज्ञानिकों ने जड़ी-बूटियों औषधीय युक्त हवन करने से वायुमंडल में रोगनाशक विषाणुओं को नष्ट किए जाने की संभावना को भी स्वीकार किया है। कोविड़ दौरान वातावरण के शुद्धिकरण में हवनों को लाभकारी माना गया।

हमारी संस्कृति में प्रत्येक शुभ कार्य, हर पर्व या त्योहार और संस्कारों की शुरुआत हवन व यज्ञों से होती है। घर परिवारों में हर संभावित परिस्थितियों में नवग्रह शांति, पितृ व देव यज्ञ या ब्रह्म यज्ञ और अतिथि यज्ञों को करने की प्रथा सदियों से है। जिन्हें हम परिवार की सुख समृद्धि के लिए बड़ी श्रद्धा-भाव और ईमानदारी से निभाते भी है। शुद्धिकरण के 'कर्मकांड' से व्यक्तिगत और सामाजिक दोषों, दोनों से ही मुक्ति प्राप्त होती है। दरअसल यज्ञीय प्रक्रिया के दौरान मंत्रों के उच्चारण से उपस्थित प्राणियों में सकारात्मक शक्तियों को बल प्राप्त होना ही हमारे जीवन में हवनों के महत्व को दर्शाता है।

यज्ञों की आहुतियां सामूहिकता का प्रतिनिधित्व करती है। जिससे एकजुटता और सहकारिता की भावनाएं विकसित होती है। राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में इनको शामिल करना निःसंदेह देशहित में... एक अनिष्ट निवारण उपाय हो सकता है।

गीतांजलि सक्सेना